Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 33-38

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

सतत विकास लक्ष्य (SDG's) और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) : एक समीक्षा

जितेन्द्र भारती
शोध अध्येता–राजनीति विज्ञान विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड)

औद्योगिक क्रांति के बाद उद्योगवाद विकास के सभी विचारों में प्रमुख हो गया है। विकास की वर्तमान शैली बहुत कुछ उद्योगों पर आधारित और वृद्धि की ओर उन्मुख है। मानव विकास की संकल्पना यद्यपि मानव की आर्थिक प्रगति की ओर निर्देशित करती है।[1] फिर भी उद्योगवाद ही प्रमुख है। सतत विकास, पर्यावरण, शिक्षा, लैंगिक समानता, भुखमरी, बीमारी इत्यादि गतिविधियों से संबंधित मुख्य पर प्रश्न उठता है। वर्ष 2000 में, संयुक्त राष्ट्र संघ में भाग लेने वाले 191 देशों के प्रतिनिधियों ने न्यूयॉर्क में सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों पर सहमति व्यक्त की थी।[2] इन लक्ष्यों का एक प्रमुख केन्द्रबिन्दु बुनियादी मापदंडों और इसका दायरा निहित रूप से विकासशील देशों पर था। इन लक्ष्यों को समग्र रूप से अपनाने में सार्वभौमिकता की कमी हुई है। यह स्थिरता की ओर बढ़ने का पहला बड़े पैमाने पर वैश्विक प्रयास था। विश्व के देशों में दूरदराज क्षेत्रों में इन समस्याओं को हल करने का यह एक कठिन कार्य है। कई लोग जो गरीबी से बच नहीं पाए, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए, या हिंसा से सुरक्षा प्राप्त नहीं कर पाए हैं। वर्ष 2015 में, दुनिया की आबादी अत्यधिक गरीबी, कुपोषित, नाजुक परिस्थितियों में रहते थी। इन सभी मुद्दों को भी हल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सत्रह (17) सतत् विकास लक्ष्यों के माध्यम से इन वैश्विक मुद्दों के समाधान का प्रस्ताव दिया था, जिसे 193 सदस्य देशों द्वारा स्वीकार किया गया था। ये प्रतिबद्ध देश सभी उपलब्ध मानव, वित्तीय और तकनीकी संसाधनों के साथ सतत विकास लक्ष्य को लागू करते हैं।

विश्व में जलवायु परिवर्तन, कार्बन, जैव विविधता और जैव–रासायनिक कारकों के महत्वपूर्ण चक्रों के स्थिर कामकाज के साथ–साथ गरीबी में कमी अब सभी विकासशील और विकसित देशों का एकमात्र ध्यान केंद्रित नहीं रह सकती है । वित्तीय और बुनियादी ढाँचों के विकास का लाभ जल्द ही दीर्घकालिक स्थिरता के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर होने वाले हानिकारक प्रभाव के नतीजों से कम हो जाएंगे। इस भावना के साथ, सतत विकास लक्ष्य स्थिरता के समग्र दृष्टिकोण की क्षमता को पूरा करने और गरीबी, भुखमरी से लेकर जलवायु परिवर्तन और वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण तक सभी क्षेत्रों को संबोधित करने का वादा करता है। सतत विकास लक्ष्य की यह यात्रा टिकाऊ दुनिया के एक नए दृष्टिकोण को बनाए रखने और गरीबी और भुखमरी को समाप्त करने और पृथ्वी की जीवन समर्थक प्रणालियों पर उच्च लागत लगाए बिना वित्तीय मोर्चो पर स्थायी लाभ हासिल करने की योजना के शुरुआती चरणों को प्रदान करने की दृष्टि से शुरू हुई। इस विकास के लिए प्रतिबद्ध सभी देशों के साथ जुड़े पैमाने, विविधता, जटिलता और राजनीतिक परिदृश्य हैं। सुधार और स्थिरता पर मौजूदा कार्यक्रमों का विस्तार करने की आवश्यकता है क्योंकि मौजूदा परियोजनाओं में कोई भी महत्वपूर्ण व्यवधान समग्र दीर्घकालिक योजना को पटरी से उतार सकता है।

राष्ट्रीय प्रणालियों के अल्पकालिक कामकाज को दीर्घकालिक नुकसान पहुंचा सकता है। एसडीजी द्वारा मान्यता प्राप्त दिशा और दृष्टि में मौजूदा परियोजनाओं को संचालित करने के लिए योग्यता, क्षमता और राजनीतिक इच्छाशक्ति में सुधार लक्ष्य तक पहुंचने के लिए ऊर्जा, कृषि, स्वास्थ्य सेवा और उद्योग क्षेत्रों में उल्लेखनीय परिवर्तन की आवश्यकता है।

सतत विकास लक्ष्यों में प्रत्येक लक्ष्य मौलिक और सम्मोहक एजेंडा प्रस्तुत करता है। दुनिया को एक स्थायी और लचीले रास्ते पर ले जाने के लिए अभूतपूर्व दायरे और महत्व की तत्काल आवश्यकता है। सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, कुछ प्रमुख कारकों पर विचार किया जाता है, जैसे – सार्वभौमिकता कोई भी पीछे न छूटे, केवल संख्याओं के बजाय वास्तविक प्रभाव, व्यवसाय और अन्य हितधारकों का साथ मिलना, ग्रह की रक्षा करना और वैश्विक शांति पर ध्यान केंद्रित करना।[3] इस जटिलता को देखते हुए, सतत विकास लक्ष्यों को केवल आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आयामों पर एकीकृत दृष्टिकोण और प्रयासों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इन लक्ष्यों में 169 लक्ष्य और प्रासंगिक संकेतक हैं जो हमारे समाज के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने का वादा करते हैं। इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संस्कृति, भौगोलिक मापदंडों, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक मान्यताओं और संसाधनों की उपलब्धता में व्यापक विविधता को ध्यान में रखते हुए, सभी देशों को इन 169 मापदंडों और 17 लक्ष्यों को अपनी परिस्थितियों के अनुरूप बनाने और उन्हें अनुकूलित करने की लचीलापन प्रदान की गई है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

सतत विकास लक्ष्य और कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की संकल्पना – संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण और विकास के विश्व आयोग (WECD) द्वारा अपनी प्रतिवेदन (1987) में 'हमारा साझा भविष्य' में विकास और पर्यावरण संबंधी सतत विकास की पहली आधिकारिक परिभाषा दी गई थी।4 इसे ब्रंटरलैंड कमीशन रिपोर्ट कहा जाता है। यह नाम इसे इसके अध्यक्ष Garo Harlem Brundtland के नाम के कारण दिया गया था। सतत विकास की संकल्पना वर्तमान की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने में विश्वास करता है।[5] दूसरी ओर कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का सरोकार किसी कंपनी की अपनी कार्यप्रणाली, उद्देश्यों और गतिविधियों में समाज के प्रति उत्तरदायित्व से है।[6] कंपनी अधिनियम (2013) की अनुसूची सात में शिक्षा, निर्धनता, गरीबी, भुखमरी, लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण, महामारी, पर्यावरण संवहनीयता इत्यादि में कंपनी की भूमिका निर्धारित की गई है।

सतत विकास लक्ष्य और कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व– कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का लक्ष्य सभी प्रक्रियाओं में साझा मूल्य सृजन करना है। संयुक्त राष्ट्र ने सरकारों द्वारा निर्देशित "सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी" ढांचे को निर्धारित किया है।[7] यह सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए सभी की भागीदारी और कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर बहु–हितधारक साझेदारी को बढ़ावा देता है। इससे औद्योगीकरण के युग में लागत का कम करने के तरीके खोजने में मदद मिली है। यदि इन गतिविधियों का समाज या पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ता, तो उन्हें अनदेखा कर दिया जाता है। कॉर्पोरेट व्यवहार में सामाजिक घटक की उत्पत्ति रोमन कानूनों और शरण, अनाथालयों, नर्सिंग होम जैसी संस्थाओं में देखी जा सकती है। कल्याणकारी योजनाओं के निर्माण में कर्मचारियों की सुरक्षा और उन्हें बनाए रखने के लिए एक दृष्टिकोण अपनाया गया और कुछ कंपनियों ने लोगों की जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने पर भी ध्यान दिया। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व निर्माण का विकास वर्ष 1950 के दशक में आरंभ हुआ। वर्ष 1960 और 1970 के दशक के दौरान, बड़े कॉरपोरेट्स सामाजिक रूप से जागरूक होने से लेकर शामिल होने की ओर बढ़ने लगे। "कॉर्पोरेट सामाजिक भागीदारी" के इर्द–गिर्द पहली औपचारिक सूत्रपात 1970 के दशक में हुई थी। कॉर्पोरेट सामाजिक जागरूकता, कॉर्पोरेट सामाजिक भागीदारी, कॉर्पोरेट सामाजिक प्रदर्शन, हितधारक प्रबंधन, नैतिक व्यवसाय जैसे कई विषय इन समयों के दौरान उभरे। कंपनियां वर्ष 1990 के दशक में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की गाड़ी में शामिल हो गईं। शेयरधारक अधिकतम लाभ कमाने के लिए सामाजिक गतिविधियों पर किसी भी खर्च को "कंपनी की लागत" के रूप में देखते थे। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और वित्तीय प्रदर्शन के बीच संबंधों की जांच करने के लिए अनुभवजन्य अध्ययन हुए हैं। कई विद्वानों ने एक संगठन की कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों द्वारा प्राप्त आर्थिक लाभों का मूल्यांकन किया है। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व उद्यमियों की ओर से एक व्यवसाय संचालित और स्व–प्रेरित गतिविधि है।[8]

सतत विकास लक्ष्य और कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच समन्वय और संसाधन– कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास लक्ष्य के मध्य किसी भी समन्वय का आकलन करने के लिए, विद्वान और व्यवसायी कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व साहित्य में सिद्धांतों के लिए अपनी गतिविधियों की अच्छाई को मान्य कर सकते हैं। औद्योगिक क्रांति के आगमन से ही, इसके फोकस या कमी का, संगठनों ने स्वयं स्थिरता के साथ संरेखण पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव डाला है। इस दृष्टिकोण ने फर्मों को कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों को करने के लिए प्रेरित किया। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की स्थायी गतिविधियाँ उनके कर्मचारियों और जिस समाज में वे काम करते हैं, उनके बीच ब्रांड जागरूकता और प्रतिधारण को बढ़ाती हैं।9 सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के लिए कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों का संरेखण सतत विकास लक्ष्य की संसाधन आवश्यकताओं के प्रति कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों के संरेखण की पुष्टि करने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों द्वारा लाभान्वित संस्थागत सिद्धांत संगठन के कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच ब्रांड की प्रतिष्ठा में सुधार कर रहा है। वे कंपनी के साथ उनके रोजगार की अवधि, वेतन, अन्य भत्ते, सामुदायिक भागीदारी और कई अन्य नौकरी संतुष्टि संकेतकों के संबंध में दस हजार से अधिक कर्मचारियों के डेटा का विश्लेषण किया। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से आंतरिक और बाह्य रूप से ब्रांड के प्रबंधन के दोनों तरीकों ने ग्राहकों की वफादारी में बढ़ोतरी दिखाई है। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की कार्रवाइयाँ बेहतर सेवा गुणवत्ता के कारण मनोवृत्तिगत वफादारी और व्यवहारिक वफादारी को प्रभावित करती हैं। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियाँ मौद्रिक लाभों के अलावा ब्रांड की छवि और प्रतिष्ठा में सुधार करती हैं। कंपनियां ब्रांड निर्माण और

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

संवर्द्धन के लिए मध्यम से लंबी अवधि में लाभ उठाती हैं इसके साथ ही समाज को भूख, गरीबी, जल स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मदद करती हैं।

कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियाँ पूरी तरह लाभ के लिए संचालित की जाती है। इस कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों का मुख्य फोकस शेयरधारकों के रिटर्न को बढ़ाना है। भारत में कोका–कोला केस स्टडी द्वारा समझाई गई कॉमन्स की त्रासदी स्पष्ट रूप से इसके संचालन में असाधारण वादों, पारदर्शिता की कमी और जवाबदेही को दर्शाती है। इस विशेष मामले में किए गए सभी कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व प्रयास शेयरधारकों और ग्राहकों द्वारा मजबूर किए गए थे। कंपनी ने लाभप्रदता पर कोई प्रभाव नहीं सुनिश्चित करने के लिए उन्हें निष्पादित किया, भले ही यह समाज द्वारा साझा किए गए साझा संसाधन की कीमत पर हो। इस तरह के कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को व्यवसायों पर स्वयं पर बोड़ा के रूप में माना जाता है यदि कंपनी के संचालन का समाज या पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल या हानिकारक प्रभाव पड़ता है, तो उन्हें अनदेखा कर दिया जाता है।10 ऐसे मामलों में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियाँ "कवर अप" के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित होती हैं और राष्ट्रीय स्थिरता आवश्यकताओं को प्राप्त करने में सकारात्मक रूप से योगदान नहीं देती हैं।

विकासशील देशों में सतत विकास लक्ष्य पर भारत, चीन और ब्राजील जैसी अर्थव्यवस्थाओं का प्रदर्शन वैश्विक परिणाम को प्रभावित करेगा। इस अध्ययन से यह जानकारी मिलेगी कि क्या कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व ने अपना ध्यान परोपकारी, कॉर्पोरेट समुदाय की भागीदारी से हटाकर जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, टिकाऊ उपभोग और उत्पादन, समुद्री जीवन और वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण के क्षेत्रों में अधिक प्रभावशाली सामाजिक पहलुओं की ओर केंद्रित किया है। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का क्षेत्रीय विश्लेषण यह निर्धारित करने में मदद कर सकता है कि क्या केवल पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले क्षेत्रों वाली व्यक्तिगत कंपनियाँ ही यथास्थिति बनाए रखते हुए सतत विकास लक्ष्य बैंडवागन में शामिल हुई हैं। अंत में, एक भौगोलिक विश्लेषण इस बात पर प्रकाश डालेगा कि क्या कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पूरे देश में को प्राप्त करने का एक व्यापक साधन बन सकता है या केवल उद्योगों के करीब के क्षेत्रों तक ही सीमित रह सकता है।

कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के गतिविधियों के सिद्धांत –

(क) संस्थागत सिद्धांत : संस्था शब्द को स्वयं एक सामाजिक संरचना के रूप में परिभाषित किया गया है, इसे उचित समय के लिए समाज द्वारा सहमत नियमों, मानदंडों और प्रक्रियाओं के भीतर स्वयं को स्थापित किया है। वर्ष 1980 के दशक में, सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के उद्यमों के उदय के साथ, संस्थागत सिद्धांत विभिन्न हितधारकों द्वारा स्थापित और अपनाया गया है। इसके चार प्रमुख स्तंभ हैं– कानूनवाद, संरचनावाद, समग्रतावाद और ऐतिहासिकता। कानूनवाद संस्थागत सिद्धांत का मुख्य रूप है क्योंकि सरकारें देश के कानूनों के माध्यम से व्यवसाय और समाज के व्यवहार को संचालित करती हैं।[11] संस्थागत सिद्धांत के अनुसार, इसमें वास्तविक प्रभाव का आकलन यह देखकर किया जा सकता है कि संस्थाएँ कानून की अस्पष्टता को किस तरह से समझ रही हैं और इसके विपरीत 'कानून' का वास्तविक अर्थ क्या है? संरचनावाद विभिन्न मापदंडों राष्ट्रपति बनाम संसदीय, संघीय बनाम एकात्मक और इसी तरह के अन्य आधारों पर संस्थागत सामाजिक संरचनाओं को परिभाषित करता है। समग्रतावाद संस्थाओं को पूरी प्रणाली को देखने और खंडित तरीके से निर्णय लेने से बचने में मदद करता है। ऐतिहासिकता संस्थाओं की संस्कृति और समाज में उनके व्यवहार के औचित्य को परिभाषित करने और समझाने में मदद करती है। यह सिद्धांत व्यावसायिक क्रियाओं का आकलन करने, संस्थागत और सामाजिक प्रक्रियाओं के टकराने या सहयोग करने के तरीके का मूल्यांकन करने और स्थिति के किसी दिए गए संदर्भ में क्रियाओं को मान्य करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। संस्थाओं को नियामक नीतियों, नियम–निर्धारण और अपेक्षित प्रतिवेदन से अनिवार्य दबावों का सामना करना पड़ता है। समाज के मूल्यों और मानदंडों से उत्पन्न होने वाले "मानक" दबाव और संगठन की संस्कृति और मूल्यों से उत्पन्न होने वाले "अनुकरणीय" दबाव हैं।[12] यह सिद्धांत संगठन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं और समाज के साथ इसके जुड़ाव की समझ को गहरा करने में भी मदद करता है। यह सिद्धांत किसी भी संगठन के सूक्ष्म दृष्टिकोण को पूरक बनाता है इससे कॉर्पोरेट सामाजिक व्यवहार के मूल कारण को समझने और संगठनों द्वारा अपनी सामाजिक रूप से गैर–जिम्मेदाराना गतिविधियों से बचने के लिए अपनाए जा रहे किसी भी साधन को उजागर करने में मदद मिलती है। इसलिए, आंतरिक और बाहरी हितधारकों के प्रभाव के लिए संस्थागत सिद्धांत द्वारा प्रस्तावित स्तंभों को देखकर कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व निर्णयों को प्रभावित करने वाले कारकों का विस्तार से अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सिद्धांत कानूनी रूप से बाध्य संगठनात्मक संरचनाओं को

देखता है यह संगठनों द्वारा अपनाई गई मानवतावादी, पर्यावरण के अनुकूल और आंतरिक–सामना करने वाली गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है। फर्म का आकार, उद्योग का प्रकार, संचालन का क्षेत्र, प्रबंधन संस्कृति और आर्थिक चक्र जैसे कुछ कारक जो कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को संचालित करते हैं।

(ख) हितधारक सिद्धांत : इस सिद्धांत के अनुसार व्यवसाय कई व्यक्तियों और समूहों के साथ वार्तालाप करता है, जिन्हें हितधारक कहा जाता है।[13] वे इसके कार्यों से सकारात्मक या प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते हैं।" इस सिद्धांत को तब प्रासंगिकता मिली थी जब कंपनियों ने पर्यावरण और समाज की कीमत पर अतिरिक्त लाभ कमाने के लिए अनैतिक प्रथाओं का पालन करना शुरू कर दिया। हितधारक सिद्धांत के माध्यम से दृष्टि, लक्ष्यों, मूल्यों और उद्देश्यों की भावना को आगे बढ़ाने में मदद की है। यह ग्राहक को एकमात्र हितधारक मानने के बजाय उसे "प्रमुख हितधारकों में से एक" के रूप में प्रस्तावित करता है। यह पारंपरिक रूप से विपणन विभाग के स्वामित्व वाली जनसंपर्क प्रक्रियाओं को सभी हितधारकों के साथ संबंध–निर्माण अभ्यास को बढ़ावा देने के लिए सभी संगठन विभागों तक विस्तारित करने में मदद करता है कि केवल आपसी विचारों के माध्यम से ही कंपनियाँ साझा मूल्य बना सकती हैं और अपने उद्देश्यों को स्थायी तरीके से प्राप्त कर सकती हैं।

हितधारक सिद्धांत के साथ एक मुद्दा यह है कि व्यवसाय पर्यावरण और समाज के हित में कार्य करने के लिए नैतिक रूप से बाध्य है। हितधारक सिद्धांत का संगठनों में शासन और नियंत्रण पर एक संकीर्ण ध्यान केंद्रित है। हितधारक सिद्धांत और कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच एकदम सही तालमेल है। यह सिद्धांत पर्यावरण और समाज के साथ किसी भी व्यवसाय के दायरे का विस्तार करता है। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से समुदाय के साथ संबंध मजबूत किए जा सकते हैं और पर्यावरण के अनुकूल होने की धारणाओं को बेहतर बनाया जा सकता है। हितधारक सिद्धांत संगठनों को कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व परियोजनाओं से लाभार्थियों पर एक स्थायी और मज़बूत प्रभाव बनाने के लिए नैतिक प्रथाओं का पालन करने में मदद करता है। हितधारक सिद्धांत संगठनों को आपूर्ति श्रृंखला और उत्पादन प्रक्रियाओं में सभी सामाजिक रूप से गैर–जिम्मेदार प्रथाओं के लिए एक परोपकारी या प्रतिपूरक उपकरण के रूप में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का उपयोग करने से रोकता है। हितधारक सिद्धांत के मानक दृष्टिकोण से संकेत लेते हुए, व्यवसाय सामाजिक समस्याओं को हल करने, साझा मूल्य के अवसर पैदा करने और सभी के लिए सतत विकास की दिशा में एक रास्ता बनाने के लिए कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की योजना बना सकते हैं।

(ग) सामाजिक अनुबंध सिद्धांतः यह नागरिकों और सरकार के बीच एक संविदा या अनुबंध या समझौता है। सरकार सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। नागरिक इसके बदले में करों ;ज्गमेद्ध का भुगतान और नैतिक कर्तव्यों का पालन करते हैं। ये क्रियाएँ एक–दूसरे के पूरक होने के कारण स्वयं को लागू करने वाली और सशक्त बनाने वाली होती हैं। सरकार सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं को तभी प्रदान कर सकती है जब उन्हें नागरिकों से कर (Tax) प्राप्त हों। इसके बदले में, नागरिक सभी करों ;ज्गमेद्ध का भुगतान तभी करेंगे जब उनके करों का सरकार द्वारा विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग किया जाए।14 विकासशील देशों में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व रणनीति को परोपकारी और कर्मचारी स्वयंसेवा गतिविधियों के लिए प्रति प्रेरित करता है। विकासशील देशों में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों की प्राथमिकताएँ परोपकारी गतिविधियों के मामले में विकसित देशों की तुलना में भिन्न हैं। सामाजिक अनुबंध व्यवसायों को अनुभवजन्य (क्या है) और मानक (क्या होना चाहिए) कारकों के आधार पर कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व रणनीति को परिभाषित करने में मदद करता है।

(घ) राजनीतिक सिद्धांतः राजनीतिक सिद्धांत व्यवसाय और समाज के बीच के अंतः क्रियाओं को देखता है। यह समुदाय द्वारा प्रदान की गई शक्ति और स्थिति से व्यवसाय की अंतर्निहित जिम्मेदारियों का अध्ययन करता है। कॉर्पोरेट संवैधानिकता और कॉर्पोरेट नागरिकता राजनीतिक सिद्धांत में दो दृष्टिकोण हैं। व्यवसाय वृहद और सूक्ष्म आर्थिक वातावरण में एक महत्वपूर्ण हितधारक है।[15] व्यवसायों के पास जो शक्ति है उसका जिम्मेदारी से उपयोग किया जाना चाहिए। कॉर्पोरेट संवैधानिकता दृष्टिकोण व्यवसायों को कमजोर सामाजिक पर्यावरणीय मानदंडों के बजाय मौजूद नियामक अंतराल को संबोधित करने के लिए एक राजनीतिक भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करता है। कॉर्पोरेट नागरिकता दृष्टिकोण का प्रस्ताव है कि जबकि विकासशील देशों में संगठन स्वयं पर्याप्त वित्तीय और मानव संसाधनों से वंचित हैं, फिर भी उन्हें नियामक अंतराल से निपटने के लिए एक राजनीतिक भूमिका निभानी चाहिए। परंपरागत रूप से, कॉर्पोरेट राजनीतिक गतिविधि स्थानीय गैर सरकारी संगठनों, पर्यावरण समूहों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नागरिकों के सहयोग से की गई कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियाँ कंपनियों को हितधारकों के हितों को इकट्ठा करने में मदद कर सकती हैं।

इससे बहुराष्ट्रीय कंपनियों को, विशेष रूप से विकासशील देशों में, राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप कॉर्पोरेट नागरिकता का विस्तार करने में मदद मिलती है। संगठन स्थानीय शासी निकाय, समुदाय या गैर सरकारी संगठनों को मनाने के लिए राजनीतिज्ञ कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का लाभ उठा रहे हैं, विशेषकर जब उनके संचालन या किसी आपूर्ति श्रृंखला प्रक्रिया में समस्याएँ होती हैं। प्रमुख राजनीतिक कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व सिद्धांत में संस्थागत सिद्धांत, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत और हैबरमासियन सिद्धांत शामिल हैं। राजनीतिक सिद्धांत की व्याख्या करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक वैश्वीकरण है और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए उस मेजबान देश के साथ संरेखित करने के लिए विदेशी देशों में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में संलग्न होने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण राजनीतिक कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व प्रयासों को उत्तेजित करता है और कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर बेहतर शासन निर्धारित करता है।[16]

सामाजिक अनुबंध दृष्टिकोण का मानना है कि सरकार सभी संगठन हितधारकों के बीच अधिकतम राजनीतिक शक्ति रखती है। हैबरमासियन सिद्धांत बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर राजनीतिक दबाव के वजाय वैश्विक कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व शासन की आवश्यकता को प्रस्तुत करता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां उपयुक्त कानूनी निर्माण में संचालन का स्वामित्व और जवाबदेही ले रही है। यह विषय संगठनों को मानव अधिकारों, पर्यावरण प्रदूषण और अन्य नैतिक रूप से जिम्मेदार प्रथाओं के पहलुओं पर आत्म–नियमन के लिए एक कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व रणनीति विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।[17]

विकासशील देशों में सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन की हाल की समीक्षा से पता चलता है कि वित्तीय संसाधनों का अभाव प्रगति को बाधित करते हैं। भौगोलिक रूप से खंडित निष्पादन और लक्ष्यों के बीच एकीकरण की कमी होती है।[18] उच्च आय वाले देश और उच्च–मध्यम आय वाले देश अपने बजट के माध्यम से अपने सतत विकास लक्ष्य को वित्तपोषित कर सकते हैं और इसके लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय हस्तांतरण या किसी अन्य वित्तीय सहायता की आवश्यकता नहीं होती है जबकि विकासशील देशों के लिए सतत विकास लक्ष्य हासिल करने के लिए वित्त पोषण की आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण हैं।

सतत विकास के लक्ष्य सभी देशों से कई साझेदारी अपेक्षित है, जैसे– सरकार द्वारा घरेलू संसाधन जुटाना, आधिकारिक विकास सहायता, वित्तीय संसाधनों के नए रास्ते खोजना, ऋण राहत पुनर्गठन, और विकसित देशों को विकासशील देशों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना। भारत में सतत विकास लक्ष्य को लागू करने के लिए 2.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का वार्षिक अंतर है। सामाजिक अपेक्षाओं को बदलने के अनुरूप कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व जुड़ाव में सुधार के लिए एक ढांचे के रूप में सतत विकास लक्ष्य का उपयोग करने का एक अनूठा अवसर है।

निष्कर्ष– कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व समय के साथ विकसित हुआ है। यह स्थिरता और सतत विकास के संदर्भ में व्यवसायों के लिए अधिक महत्व प्राप्त कर रहा है। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा भारत के लिए नई नहीं है। कंपनी अधिनियम (2013) के बाद विकासशील देशों में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से विभिन्न विकास आधारित पहलों ने सामाजिक विकास के लिए मंच प्रदान किया है। यह व्यवसायों और हितधारकों के लिए मूल्य प्रस्ताव बनाने के अवसर पैदा किए हैं। कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास लक्ष्य के बीच संबंध को समझने के लिए सतत विकास लक्ष्यों का विस्तार से अध्ययन किया गया है इसने कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों के गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पहलुओं के साथ–साथ कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के व्यय प्रारूप का भी अध्ययन किया है। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का सतत विकास लक्ष्य से सीधा संबंध है। इनके बीच संबंध को मजबूत करने के लिए ठोस प्रयास और अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Sundar, P. (2000), Beyond Business : From Merchant Charity to Corporate Citizenship, New Delhi, Tata McGraw Hill. Pg.No-15.
2. अग्रवाल, अनिल (1992) 'वाहट इज सस्टेनेबल डेवेलपमेंट ए डाउन टू अर्थ, जून 2015, पृष्ठ–50.
3. उपरोक्त पृ. सं० – 51.
4. उपरोक्त पृ. सं० – 51.
5. उपरोक्त पृ. सं० – 51.

6. Singh, S.K. & Singh, A.K. (2018), Corporate Social Responsibility in India Emerging Issues and Challenges, New Delhi, Serials Publications Pvt Ltd. Pg. No- 69.
7. उपरोक्त, पृ. सं० –70.
8. उपरोक्त, पृ सं० –70.
9. Piercy, N.F. & Lana, N. (2009) Corporate Social Responsibilties : Impacts onStrategic Marketing and Customer Value. Marketing Review 9(4), Pg No - 336.
10. उपरोक्त, पृ सं० 336.
11. Sundar, P. (2000), Beyond Business : From Merchant Charity to Corporate Citizenship, New Delhi, Tata McGraw Hill. Pg.No-71
12. Piercy, N.F. & Lana, N. (2009) Corporate Social Responsibilties : Impacts on Strategic Marketing and Customer Value. Marketing Review 9(4), Pg No - 338.
13. उपरोक्त, पृ. सं० 339.
14. Sundar, P. (2000), Beyond Business : From Merchant Charity to Corporate Citizenship, New Delhi, Tata McGraw Hill. Pg.No-15-
15. उपरोक्त, पृ. सं० 73.
16. उपरोक्त पृ. सं० 74.
17. Piercy, N.F. & Lana, N. (2009) Corporate Social Responsibilties : Impacts on Strategic Marketing and Customer Value. Marketing Review 9(4), Pg No - 340.
18. अग्रवाल, अनिल (1992) 'वाहट इज सस्टेनेबल डेवेलपमेंट ए डाउन टू अर्थ, जून 2015, पृष्ठ 54.

*****